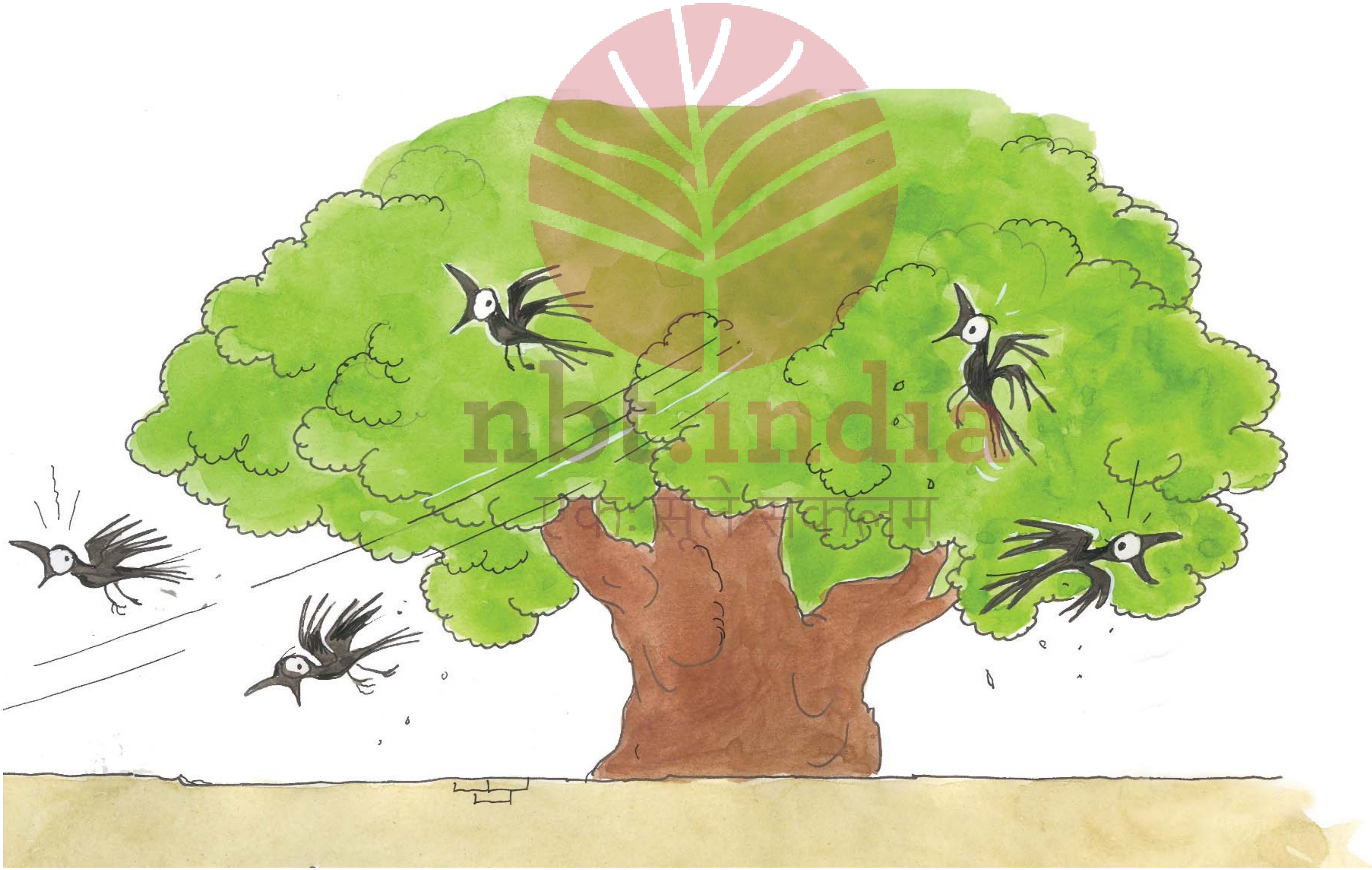
रविवार है कितना अच्छा

देबाशीष देब



nbt.india

एकः सूते सकलम्

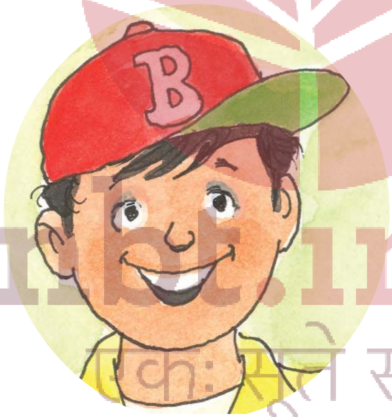


नेहरू बाल पुस्तकालय

रविवार है कितना अच्छा

देबाशीष देब

अनुवाद : पृथ्वीराज मोंगा



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA



ISBN 978-81-237-4855-9

पहला संस्करण : 2007
सातवीं आवृत्ति : 2019 *(शक 194.)*

A Happy Sunday *(Original English)*
Ravivar He Kitna Achchha *(Hindi)*

₹ 40.00

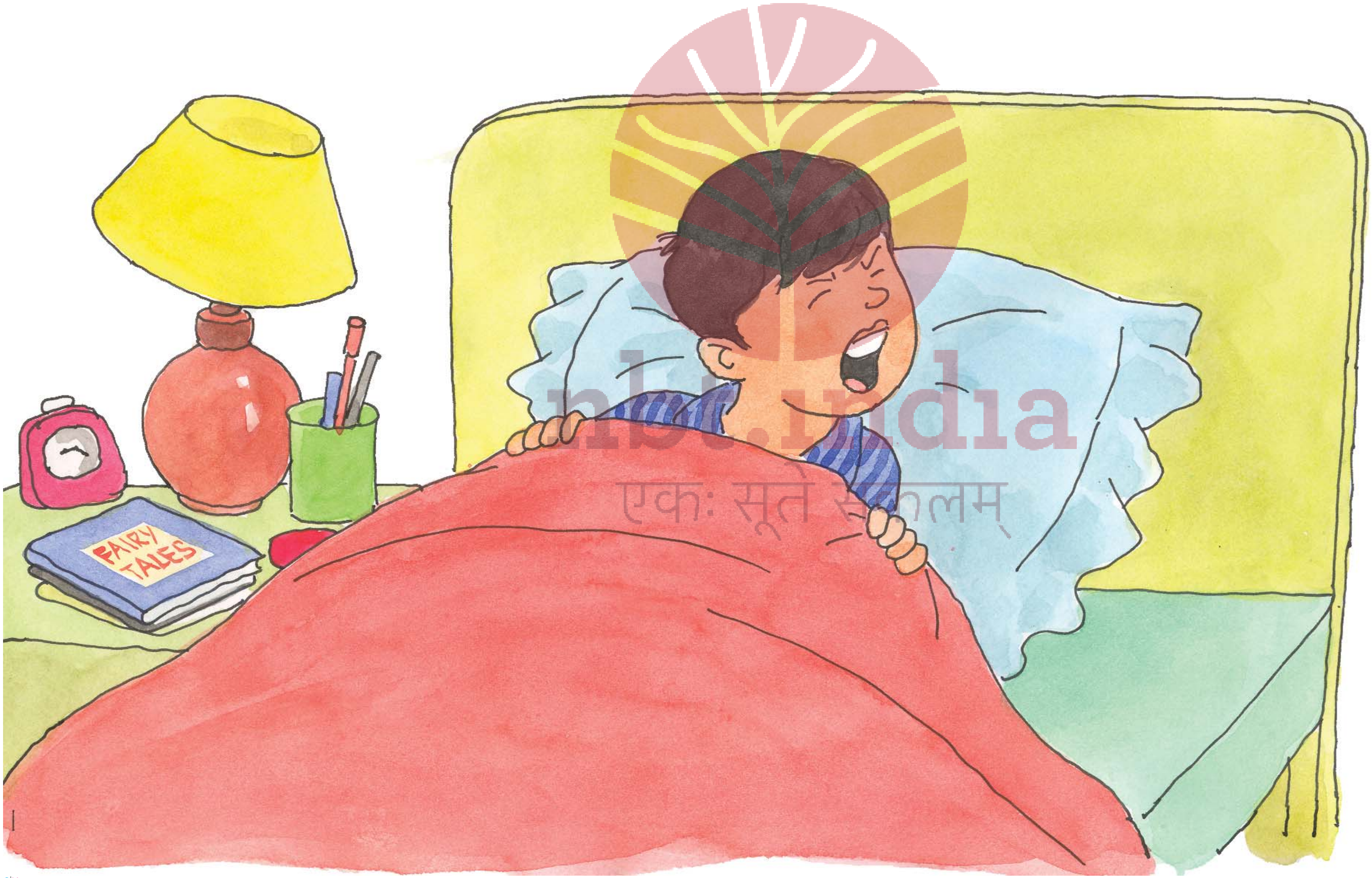
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in



आज रविवार है। मतलब
कि बंटी के लिए छुट्टी का दिन!


“बंटी, नौ बज चुके हैं।
अब बिस्तर को छोड़ो भी!”
मां ने आवाज दी।

“मां, पहले मेरे लिए ऑमलेट बनाने का वादा करो।” बंटी ने कहा।





"पापा, आज अखबार का 'खेल-जगत'
पन्ना सबसे पहले मैं देखूंगा।"

"वाह! भारत ने हाकी में
सोने का पदक जीता!"



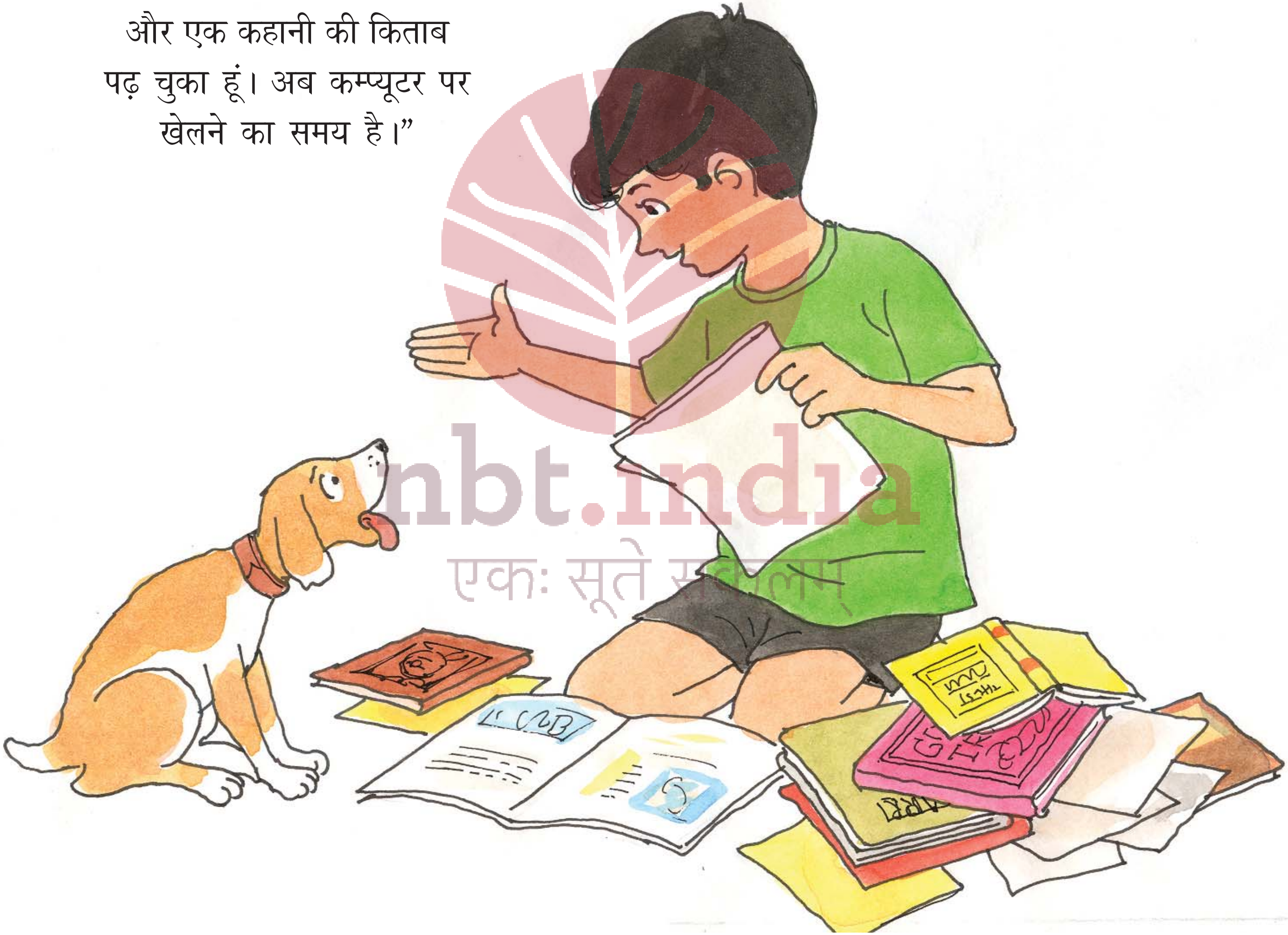
"दूध नहीं मां, आज मैं सिर्फ चाय
लूंगा, पापा की तरह।" बंटी मुस्कराया।



"आओ जिम्मी, अब हम कहानी
की किताब पढ़ते हैं।"



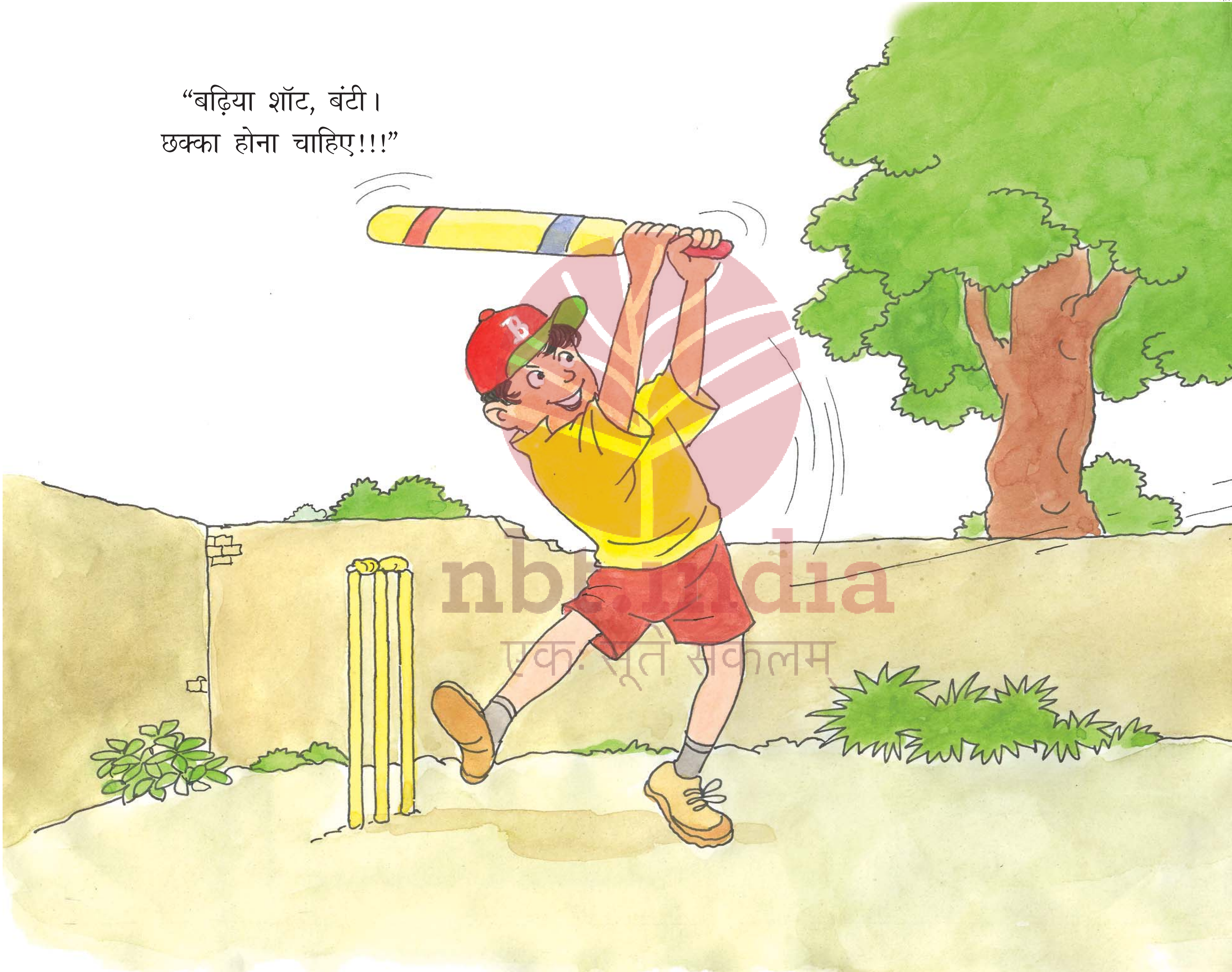
“अब तक मैं ‘खेल-जगत’ पन्ना, एक कॉमिक और एक कहानी की किताब पढ़ चुका हूं। अब कम्प्यूटर पर खेलने का समय है।”

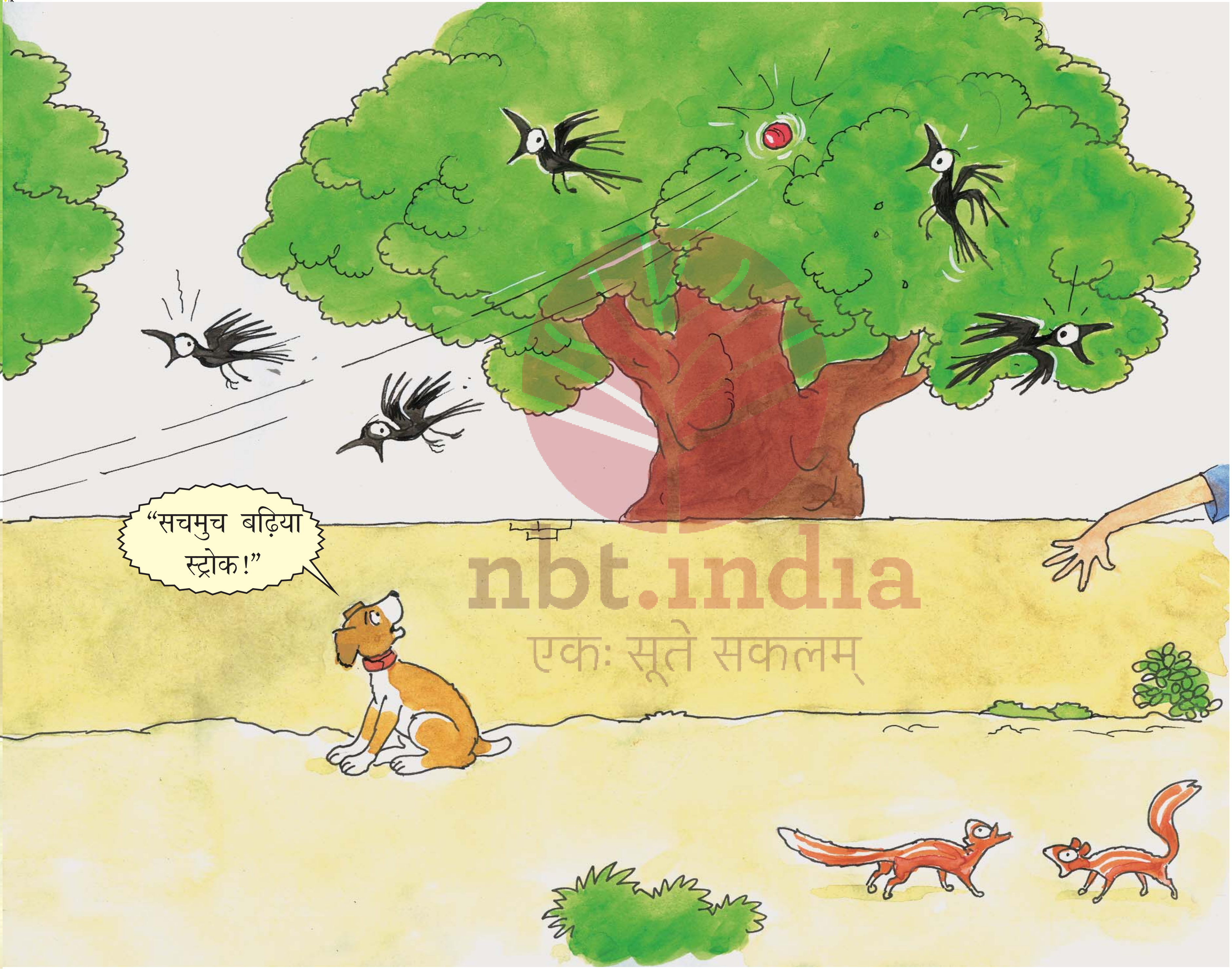


"मां, पांच बज गये। यानी क्रिकेट
खेलने का समय।"



"बढ़िया शॉट, बंटी।
छक्का होना चाहिए!!!"




“सचमुच बढ़िया
स्ट्रोक!”


“मां, मैं आ गया।”
“जाओ और अच्छी तरह नहा लो, बेटा!” मां ने कहा।

“कितना, मजा आ रहा है!”



“बंटी, बंटी!”
मां ने पुकारा

“मैं कार्टून शो देख रहा हूं।
यह मुझे बहुत पसंद है।”





“मैंने अपने पोकेमॉन
कार्ड कहां रख
दिए हैं?”

“ट्रिंग
ट्रिंग
ट्रिंग...”


“बंटी, तुम्हारी क्लास वाले दोस्त राजीव का फोन है... वह जानना चाहता है कि कल की छुट्टी है या...


"बहुत देर हो गयी है। जल्दी से खाना खाओ, ब्रश करो और जाकर सो जाओ। कल तुम्हें स्कूल जाना है...


"मुंह क्यों बना रहे हो, बंटी?
हर दिन खास होता है।
हर सोमवार अच्छा होता है। उसके
बाद आता है मंगलवार,
और उसके बाद...
"बेचारा
बंटी!"

रविवार है कितना अच्छा



गोपसंस पेपर्स लि., नोयडा द्वारा मुद्रित



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

₹ 40.00
ISBN 812374855-8
9788123748559
19200000